प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

आचार्यश्री महाप्रज्ञ का श्री समवसरण में भव्य स्वागत

संयम के द्वारा ही रोटी पानी की समस्या का समाधान हो सकता है

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

सरदारशहर, 28 अप्रैल,2010।

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमण, साध्वी प्रमुखाकनकप्रभाजी सहित सर्व साधु–साध्वियां प्रात 7.30 बजे मंगलचन्द भंवरलाल बैद के निवास पर तीन दिवसीय प्रवास संपन्न कर आज (28 अप्रैल) को विशाल जुलूस के साथ श्री समवसरण (साधों के ठिकाने) में पधारे। इस जुलूस में तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल, ज्ञानशाला, तेरापंथ सभा एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्यकर्त्ताओं सहित हजारों श्रावकों ने सहभागिता दर्ज करा अपने आराध्य का अभिनन्दन किया।

श्री समवसरण में आयोजित दो दिवसीय स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए आज प्रथम दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि सरदारशहर को छोटा शहर कहूं या बड़ा कस्बा कहूं। यहां पर बहुत विकास हुआ है। मैं पूछना चाहूंगा कि यहां बड़ा बाजार है। पर क्या इस बाजार में अच्छा दर्पण मिलता है? दर्पण प्रतिबिम्ब दिखाता है। जो प्रतिबिम्ब दिखाता है वह अच्छा नहीं होता। ऐसा दर्पण चाहिए जिसमें व्यक्ति अपना असली चेहरा देख सके। वर्तमान में समाज हो, राजनीतिक संगठन हो, धर्मसंघ हो, सब जगह अपने असली चेहरे को नहीं देखा जा रहा है। अपनी भूल कोई स्वीकार नहीं कर रहा है। भ्रष्टाचार बढा है पर अधिकारी लोग इसे स्वीकार नहीं कर रहे। बेईमानी बढ़ी है उसे व्यापारीवर्ग स्वीकार नहीं करता। सब एक दूसरे पर ध्यान दे रहा है पर स्वयं को नहीं देख रहे हैं। आचार्य तुलसी ने सरदारशहर के इसी समवसरण से असली दर्पण बनाने का कारखाना प्रारंभ किया था। वह असली दर्पण थे संयम ही जीवन है और निज पर शासन फिर अनुशासन। व्यक्ति जब स्वयं पर अनुशासन करना सीख जायेगा तो दूसरों पर अनुशासन करने की जरूरत ही नहीं रहेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जल की समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अणुव्रत का यह उद्घोष संयम ही जीवन है सब समस्याओं का समाधान है। जब व्यक्ति संयम को प्रमुखता दें तो रोटी और पानी की समस्या अपने आप समाहित हो जायेगी। जैन श्रावकों ने जिस तरह से पानी का संयम किया है वह सबके लिए उदाहरणीय है। आज जरूरत है ऐसे श्रावकों की जीवनशैली वर्तमान के श्रावकों के द्वारा अपनाई जाये। उन्होंने कहा कि उपभोगवादी मनोवृत्ति के कारण ही शीर्ष राष्ट्र भी हिल गये। प्रत्येक देश समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए जरूरी है व्यवस्था में परिवर्तन हो। व्यवस्था परिवर्तन के बिना समाधान संभव नहीं

है। हमारा यहां आगमन समस्याओं के समाधान के लिए एवं दृष्टि की चिकित्सा के लिए हुआ है। डॉक्टर आंखों का इलाज कर देता है पर दृष्टि को सम्यक् नहीं बनाता। हमारे प्रवास में सम्यक् दृष्टि का विकास हो इस पर ध्यान देना है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति दुःख मुक्ति का प्रयास करता है और शांति से रहना चाहता है। स्वयं का स्वयं के द्वारा निग्रह करने पर परम शांति को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शांति का मार्ग दिखाने वाले बहुत कम लोग होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं शांति का जीवन जी रहे हैं और लोगों को शांति का मार्ग दिखा रहे हैं।

युवाचार्य प्रवर ने कहा कि भगवान की सच्ची भक्ति करने का अर्थ है मनुष्य के मन में संतुष्टि पैदा होना। आचार्यप्रवर दूसरों में संतोष पैदा करने और शांति, चित्त समाधि मिले ऐसा प्रयास करवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य में दूसरों को शांति प्रदान करने की शक्ति है। उसका सम्यक् उपयोग कर दुःख को दूर करने का प्रयास होना चाहिए। अगर किसी का दुःख धैर्य से सुन भी लिया जाये तो उसका मन हल्का हो जाता है। उन्होंने सेवा की भावना पुष्ठ करने की प्रेरणा दी।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि जिस देश में संत होते हैं वहां आदर्श सुरक्षित रहते हैं। संत ही मानव का निर्माण करते हैं और देश की समस्याओं का समाधान सुझाते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जल की कमी के कारण समाज समस्या से जूझ रहा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सरदारशहर में जल की समस्या का समाधान हेतु पदार्पण हुआ है। आचार्य प्रवर के नख से लेकर सिख तक अमृत झरता है। आपकी वाणी से अमृतवर्षा होती है। सरदारशहर के लोग इस अमृत वर्षा का पान करेंगे, जिससे इनकी प्यास बुझेगी और तृप्ति का अनुभव होगा। यहां लोग आचार्यश्री का स्वागत जल का संयम करने के संकल्प के साथ करें तो सच्चा स्वागत होगा।

इस अवसर पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने भी संबोधित किया। साध्वी सुमतिप्रभा ने अपनी जन्मभूमि की ओर से स्वागत किया।

स्वागत समारोह के अवसर पर स्थानीय विधायक अशोक पींचा, नगरपालिका के चैयरमेन ज्यान मोहम्मद आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक सुमतिचन्द गोठी, स्वागताध्यक्ष बिमल कुमार नाहटा, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया, राजीव गद्यैया, सिद्धार्थ गद्यैया, स्थानीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा, स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सूरजदेवी बरड़िया, स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष दीपक बुच्चा, स्थानीय अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष पटावरी, स्थानीय व्यापार मण्डल के अध्यक्ष प्रभाकर जोशी, साधुमार्गी समाज के अध्यक्ष प्रकाश बरड़िया आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री सी.ए. रतन दूगड़ ने किया।

इनकी रही आकर्षक प्रस्तुतियां

स्वागत कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुत परिसंवाद एवं तेरापंथ कन्यामण्डल का गीत आकर्षण का केन्द्र रहा। बच्चों ने परिसंवाद में दीक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्वयं को समर्पित करने की भावना प्रस्तुत की जिस पर आचार्य महाप्रज्ञ ने मंद मुस्कान के साथ प्रतिप्रश्न में सभी के दीक्षा के लिए तैयार होने की जानकारी प्राप्त की। तेरापंथ कन्या मण्डल द्वारा प्रस्तुत गीत में ऐतिहासिक क्षणों की याद के साथ रोचकता ने सबको प्रभावित किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मण्डल की उपाध्यक्षा श्रीमती शीला संचेति ने स्वनिर्मित आचार्य प्रवर का चित्र महिला प्रतिनिधियों के साथ समर्पित किया। अणुव्रत समिति की तरफ से छगनलाल शास्त्री एवं अध्यक्ष आदि कार्यकर्त्ताओं ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया। तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी।

महाप्रज्ञ ने कहा सीरीज का 38वां भाग विमोचित

कार्यक्रम में महाप्रज्ञ ने कहा सीरीज का 38वां सुमन विमोचन के लिए मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण को समर्पित किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रस्तुत कृति के विमोचन के बाद फरमाया कि इस कृति में अहिंसा यात्रा के दौरान किये गये प्रवचनों को संकलित किया गया है। 38वां भाग आ चुका है। ये संख्या शतक तक पहुंच सकती है। ज्ञातव्य है कि आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित महाप्रज्ञ ने कहा सीरीज की लोकप्रियता इसी बात से आंकी जा सकती है कि लाखों प्रतियां पाठकों तक पहुंच चुकी है और आने वाली प्रत्येक कृति की मांग पाठकों की तरफ से पहले ही आने लग जाती है। महाप्रज्ञ ने कहा सीरीज के 38वें सुमन का सम्पादन मुनि जयकुमार ने किया है।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)